अकबरकालीन मुगल चित्रकला में रामायण का चित्रण

डॉ० नीरू
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग एवं विभागाध्यक्ष
रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, बिजनौर
ईमेलः neeruvipin@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० नीरू

अकबरकालीन मुगल चित्रकला में रामायण का चित्रण

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 33 pp. 218-222

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

भारतीय इतिहास में मुगल साम्राज्य एक नवीन पृष्ठ है और उसकी चित्रकाला एक सुखद संयोग। वस्तुतः हम भारतीयों ने तो इतिहास को केवल कलमबद्ध ही किया जबकि मुगलों ने तो इतिहास को लिखवाया भी और चित्रित भी कराया।

भारत में मुगलों ने जिस चित्रकला शैली की नीव डाली वह एक ऐसी उन्नतशील और शक्तिशाली कला आन्दोलन के रूप में विकसित हुयी जिसने उत्तरवर्ती मध्ययुगीन युग में भारतीय कला के इतिहास की धारा को बदल दिया।[1] मुगल युग की चित्रकला भारतीय व ईरानी तत्वों का सुखद सुन्दर समन्वय है।

अकबर का कहना था कि चित्रकारी ही एक ऐसा अनोखा मार्ग है जो ईश्वर के समीप ले जा सकता है जब किसी मानव आकृति को वह बनाता है और उसमें जान नहीं डाल पाता तो उसका सारा ध्यान ईश्वर की ओर जाता है। जो जीवन का एक मात्र दाता है इस प्रकार उसका ज्ञान बढता है।[2] अकबर की रूचि युवाकाल से ही चित्रकला की ओर थी अकबर ने भवन निर्माण व चित्रकला को विशेश महत्व दिया।[3] अकबर काल के मुसलगानों ने धर्म के कट्टर रूप को नहीं माना और चित्रकला जोकि मुसलमान धर्म में निषेध है, उसकी उन्नति के लिये सहयोग प्रदान किया।[4] उसने सबसे पहले कला को धार्मिक बन्धनों से मुक्त किया, जिससे कला में नई दिशा आ सके। अकबर ने हिन्दु धर्म के धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद भी कराया।[5] अकबर की उदार नीति और धार्मिक भावना के कारण ही एक नये युग का जन्म हुआ।[6]

अकबर चित्रकला के प्रति अत्यधिक उदार था। अकबर का कला प्रेम इस बात से झलकता है कि उसके दरबार में सौ से अधिक चित्रकार थे। यद्यपि इन चित्रकारों के प्रमुख ईरानी चित्रकार अब्दुस्समद और मीर सैय्यद अली जुदाई थे।[7] उसने आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना की जिसमें राजस्थान के प्रसिद्ध चित्रकार मनोहर जी को चित्रकला के शिक्षक के रूप में नियुक्त किया था। इस चित्रकार के विषय में 'अकबरनामा' में उल्लेख है। इस चित्रशाला में हिन्दु व मुस्लिम दोनों प्रकार के चित्रकार थे, जो विशुद्ध भारतीय पद्धति से मुगल शैली का प्रशिक्षण देते थे। अकबर ने अपने शासन काल में 24,000 हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह किया था जिसमें से सैकड़ों पुस्तकें चित्रित थीं।[8]

मुगलकालीन चित्रकार विशेष रूप से कागज पर ही चित्र बनाया करते थे। अन्य शैली के चित्रकारों की तरह मुगलकालीन चित्रकार भी चित्र बनाने योग्य कागज तैयार करने के लिये 3–4 कागजों को एक के ऊपर एक चिपकाकर कागज तैयार करते थे। इन तैयार कागजों में से योग्य कागज निकाल लिया करते थे। इन कागजों पर गेरू के रंग से या कत्थई रंग से चित्र की सीमा बनायी जाती थी। इस पहली सीमा रेखा के बाद सफेद पारदर्शी रंग दो या तीन बार लगाया जाता था। इसके बाद पुनः रेखाकंन किया जाता था जिसे ''सच्ची टिपाई'' कहा जाता था। फिर चित्र में दो या तीन बार रंग भरकर चिकना करने के लिये चित्र को उलट कर चिकने पत्थर पर रखकर शंख या अन्य कोई चिकने पत्थर से रगड़ा जाता था। इस क्रिया के बाद चित्रों में जहां जिस रंग की कमी लगती थी, रंग भर दिया जाता था। इस क्रिया से चित्र में रंग पूरी तरह जम जाता था और उसमें एक प्रकार की चमक पैदा हो जाती थी। अंत में सीमा रेखा के चित्रण से चित्र की स्पष्ट आकृति और जहाँ छाया या प्रकाश दिखाने की आवश्यकता होती थी, उसे रेखा एवं रंग से स्पष्ट किया जाता था। यह क्रिया उस समय के सभी चित्रकार भारतीय शैली एवं मुगल शैली के चित्रों में करते थे।[9] पर्शियन कला के प्रभाव के कारण आकृतियों में नाजुक और सफाईदार रेखाकंन पारदर्शी धुधंले रंगों का प्रयोग करने के प्रति कलाकारों का विशेष झुकाव था।[10]

अकबर के समय में चित्रकला कई रूपों में विकसित हुयी। शबीहो का अंकन हुआ, भित्ति चित्र बने, कागजी पुस्तक–चित्र या पोथी दृष्टान्त–चित्र भी बने।

अकबर ने भारतीय साहित्य एवं कथानकों के चित्रण में विशेष रूचि दिखाई। इनमें रामायणए रामचरितमानस, महाभारत, नल दमयन्ती तथा नैशधचरित, पंचतन्त्र सूर सागर, हरिवंश पुराण आदि पर चित्रण प्रमुख है।

इस विषयों से सम्बन्धित सचित्र पोथियों की कुछ प्रतियाँ और कुछ खण्डित प्रतियाँ आज भी भारतीय तथा विदेशी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।[11]

अकबर ने हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों का फारसी अनुवाद करवाया क्योंकि वह स्वयं भी इन ग्रन्थों को समझने को उत्सुक था। इन ग्रन्थों पर आधारित लघुचित्रों के माध्यम से न केवल इन ग्रन्थों का यश बढ़ा वरन् आज की पीढी को तत्कालीन भारतीय संस्कृति हिन्दू रीति रिवाजों को समझने का मौका मिला। इस प्रकार इन चित्रों के रूप में तत्कालीन भारतीय संस्कृति सुरक्षित है।

अकबर ने रामायण का फारसी में अनुवाद कराया किन्तु नाम रामायण ही रखा। अकबर ने वाल्मीकि रामायण को अनुवाद करने का कार्य मुल्ला बदायूँनी को सन 1585 ई0 में सौपा था और सन् 1588 ई0 में चित्र बनाने का कार्य समाप्त हुआ।[12] बदायूँनी एक महान इतिहासकार, लेखक व शिक्षाविद्ध था, इसीलिये रामायण के फारसी अनुवाद के लिये उसे चुना गया। संस्कृत और फारसी का प्रकाण्ड विद्वान होने के कारण उसने भी एक–एक शब्द का सही–सही अनुवाद किया।

रामायण विषयक एक चित्र में श्री राम के बनवास के समय में दण्डकारण में उपस्थित राम व सीता का अंकन है। चित्र में एक वृक्ष के नीचे मुनि तपस्या कर रहे हैं। समीप ही चित्र के बीच में श्यामवर्णी राम व गौरवर्णी सीता जी बैठे हुए है। श्री राम ने पीली धोती व सफेद पारदर्शी पटका डाला हुआ है। एक कन्धे पर धनुष लिये हुये हैं। सीता जी ने लाल रंग का लहंगा, चोली व पारदर्शी आंचल ओढा हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर इस चित्र में जगह–जगह ऋषि मुनी तपस्या कर रहे हैं। (चित्र सं0 1)

एक चित्र में उस समय का अंकन है। जब राम सीता व लक्ष्मण अयोध्या को छोड़ कर पंचवटी में निवास करने लगे थे। चित्र में एक आसन पर श्याम रंग के राम व सीता जी विराजमान है उनके आगे लक्ष्मण बैठे है। दोनों भाईयों के हाथों मे धनुष है। राम सीता जी वार्तालाप कर रहें है। अग्रभूमि में बहुत सुन्दर अलंकृत फर्श बना है। सम्पूर्ण चित्र में मुगलकालीन मीनाकारी व चित्रकारी दृष्टिगोचर है। राम व सीता के पीछे एक वृक्ष है जिस पर पक्षी बैठे है। पृष्ठभूमि में सुन्दर अलृकंत महल का अंकन

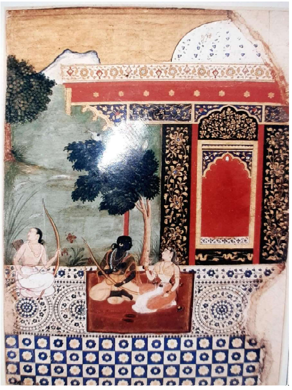

है ऐसा लगता है कि मुगल कलाकारों ने पंचवटी के आश्रम की कल्पना महल के रूप में की है। जैसा की चित्र देखने से विदित होता है। जबकि पंचवटी तो जंगल में बनी कुटिया मात्र थी। (चित्र सं0 2)

एक अन्य चित्र में राम व लक्ष्मण को अन्य वानरों व भालू के साथ वार्तालाप करते हुये अंकित किया है। गहरे नीले रंग से आकाश बनाया गया है। चित्र में नीचे की ओर बीच में पत्थर की पाहाडियाँ अंकित है। उसके समीप नीचे की ओर अग्रभूमि में योद्धा वानर और भालुओं का अंकन है। स्थान स्थान पर कुछ वृक्षों का भी अंकन है। पृष्ठ भूमि में भी दो वृक्षों को अंकित किया गया है। चित्र आकर्षक बना है। (चित्र सं0 3)

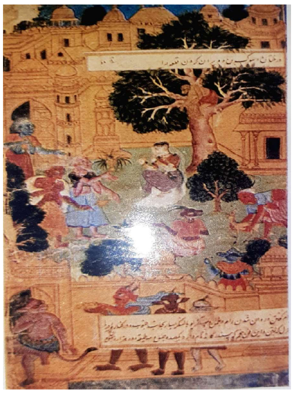

मुगल शैली के एक अन्य चित्र में सीता जी की खोज में निकले हनुमान श्री राम द्वारा दी मुद्रिका लेकर लंका की अशोक वाटिका में पहुँचते है। इस चित्र में चारों तरफ सुनहरे रंग की लंका का चित्रण है। अशोक के वृक्ष के नीचे सीता जी को बैठे दिखाया गया है। आसपास अन्य राक्षसी दासी भी हैं। सीता जी के पीछे पेड़ के ऊपर हनुमान जी बैठे हुये हैं, जो वहीं से झुककर राम का सन्देश रूपी मुद्रिका सीता जी को देते हैं। सीता जी उस मुद्रिका को निहार रही है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि दुःख के क्षण सुख में परिवर्तित हो गये हों। चित्र में सुनहरे रंग की प्रधानता है। ऊपर तथा नीचे दोनों स्थानों पर उर्दू में लिखित दो पटि्टकायें हैं। जो सम्भवतः चित्र के प्रसंग से सम्बन्धित है। (चित्र सं0 4)

चित्रों की विशेषताऐं

मुगल शौली में चेहरे हमेशा एक चश्म ही बने हैं। रेखाओं में कोमलता व बारीकी दर्शनीय है। अलंकरणों में सूक्ष्म प्रवृत्ति को अपनाया गया है। मुगल शैली में रंग विधान ईरानी तथा भारतीय पद्धतियों से भिन्न रहा उसमें लाल जर्दी तथा सुनहरे रगों का प्रयोग हुआ। मुखाकृतियों में हल्के गुलाबी रंगो का प्रयोग हुआ है। रंग विधान कोमलता है। दरबारी शानो–शौकत का चित्रण किया गया है। अलंकृत हाशिये प्रकृति का चित्रण आदि मुगल चित्रों में दशनीय है।

रामायण सम्बन्धी मुगल चित्रों को देखने से स्पष्ट होता है कि मुगल बादशाह अकबर धार्मिक कथाओं विशेषकर रामायण के आदर्शों व भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थे। मुगल बादशाह अकबर के आश्रय में संरक्षित और पल्लवित मुगल शैली का भारतीय चित्रकला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। वृहद भारतीय जनमानस में कला के प्रति अनुराग जगाने और देश के कलाकारों को समुचित आदर सम्मान प्रदान करने में मुगल शासको की अमर देन है। इसक देश की भावी कला उन्नति के लिये मुगलों ने जो कार्य किया, वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा, हरिश्चन्द्र : मध्यकालीन भारत, भाग–2 हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ0 510
2. दास रायकृष्ण : भारत की चित्रकला, इलाहाबाद, 1969, पृ0 51
3. वर्मा अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ0 122
4. गैरोला वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन प्रा0 लि0, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1963, पृ0 173
5. सांस्कृत्यायन राहुल : अकबर, पृ0 237
6. रामनाथ : मध्यकालीन भारतीय कलायें और उनका विकास : पृ0 55
7. चतुर्वेदी, डॉ0 गोपाल मधुकर : भारतीय चित्रकला : ऐतिहासिक संदर्भ साहित्य संगम, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, 1999 पृ0 136
8. बडेरिया, तारकनाथ : भारतीय चित्रकला का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 82
9. वही, पृ0 83
10. पाटकर, रमेश चंद्र नारायण : कला इतिहास भारतीय और पाश्चात्य, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण 1997, पृ0 44
11. गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, पृ0 181
12. अग्रवाल आर0ए0 : कला विलास, पृ0 127